'मेरे मंदिर में भारतीय संविधान की मूर्ति होगी'

आदरणीय जस्टिस शिव कुमार जी,

आपकी बधाइयों के लिए कोटि-कोटि धन्यवाद। साथ ही देश सेवा में आपके अपार अनुभव को मेरा नतमस्तक प्रणाम। इसी अनुभव पर आधारित जो यथार्थ का कटु चेहरा आपने मेरे समक्ष प्रस्तुत किया है (अपने लेख द्वारा), उसने मुझे इस सफलता की चकाचौंध से झकझोरा और भविष्य में आने वाली चुनौतियों के बारे में सोचने को विवश किया।

चुनौतियां गंभीर हैं परन्तु मेरा मन फिर भी जाने क्यों आशा का दामन छोड़ निराशा की गोद में जाने से इंकार कर रहा है। आप इसको मेरी नासमझी एवं अनुभवहीनता कह सकते हैं मगर मेरा मानना है कि देश बदल रहा है और इस बदलाव का स्रोत देश की वह युवा पीढ़ी है जो आज स्कूल-कॉलेजों में पढ़ती है और कल इस देश का नेतृत्व होगी। यह पीढ़ी कल की पीढ़ी की तरह नहीं है जहां आम आदमी सिर्फ एक 'भीड़' का हिस्सा था तथा अफसरशाही व राजनैतिक शक्तियों के नीचे दबता था। यह वह पीढ़ी है जो कि शिक्षित है, आत्मविश्वास से परिपूर्ण है तथा अपने अधिकारों के बारे में जानती है। यह वह पीढ़ी है जो कि जात-पात, धर्म आदि के चिरपरिचित हथकंडों में बहने के बजाय मांग करती है सुशासन की तथा इस सुशासन के लिए अपने वोट के इस्तेमाल से लेकर सड़क पर आने से भी नहीं डरती। यह पीढ़ी देश को बदलेगी तथा आज नहीं तो कल सरकार व अफसरशाही को भी बदलना होगा। यह बदलाव उसी प्रजातंत्र की वजह से होगा जिसमें आज सूर्य की उपेक्षा होती है और जुगनुओं की पूछ।

श्रीमान, बहुत संभव है कि इस बदलाव के पूरी तरह आने में कुछ और समय लगे। यह भी हो सकता है कि मेरे संपूर्ण सेवाकाल में भी यह पूर्ण आकार न ले सके। मुझे कभी भी 'प्राइज पोस्टिंग्स' नहीं मिलेगी। मेरे 'यसमैन' न होने की वजह से हो सकता है मैं कभी आपकी नजरों में 'सफल' अधिकारी न बन पाऊं। मुझे संपूर्ण सेवाकाल में हाशिये पर ही रखा जा सकता है। मगर यह सब होने के बावजूद मुझे खुशी इस बात की रहेगी कि मैं उस बदलाव को लाने में यथासंभव योगदान दे सका। अपने समस्त सेवाकाल में मेरी कोशिश ऐसे काम करने की रहेगी, जिनसे बदलाव चाहने वाली युवा पीढ़ी प्रेरणा ले सके। मंदिर का पुजारी मैं अवश्य रहूंगा, मगर मेरे मंदिर में मूर्ति रहेगी देश के संविधान की। पानी की तरह मैं अवश्य बनूंगा, मगर मेरा प्रयत्न रहेगा उस महासागर की तरह बनने का जिसको ढालने के लिए आज तक कोई बर्तन ही नहीं बना। सूरजमुखी मुझे बनना है, मगर सिर्फ ज्ञान का प्रकाश ग्रहण करने के लिए। और पेड़ की तरह भले ही मैं कट जाऊं, मगर खुशी इस बात की रहेगी कि कम से कम मैं पंछी को छाया तो दे सका। यही मेरा लक्ष्य है माननीय जज साहब। देश को इसकी जरूरत है।

आज से तीस वर्ष बाद जब मैं सेवानिवृत्त होऊंगा तब उम्मीद करता हूं मुझे किसी नए 'गौरव' को वह सब लिखने की जरूरत ना पड़े जो आज आपने मुझे लिखा है। तभी अपने आप को मैं सफल मानूंगा।

- आपका शिष्य
गौरव अग्रवाल (आईएएस टॉपर)

आईएएस परीक्षा का परिणाम आने के बाद टॉपर के नाम जस्टिस शिवकुमार शर्मा का पत्र छापा गया था। प्रतिक्रिया में टॉपर और पूर्व आईएएस के पत्र।

प्रिय गौरव,

सर्वप्रथम तो स्वयं का, परिवार का एवं राजस्थान का पूरे देश में नाम ऊंचा करने के लिए बहुत बधाई।

तुम्हारा आईएएस में प्रथम स्थान पर रहना एक विशेष महत्त्व रखता है क्योंकि तुमने एक सुख सुविधापूर्ण आरामदायक एवं एक करोड़ रुपए का वार्षिक वेतन छोड़कर देश के नागरिकों की सेवा के लिए आईएएस को माध्यम के रूप में चुना है। मैंने टीवी चैनल पर तुम्हारा एवं तुम्हारी माताजी का साक्षात्कार भी देखा जिसके बाद यह कहा जा सकता है कि तुम्हारा निर्णय जल्दबाजी में नहीं अपितु पूरी तरह सोच विचार कर लिया गया है।

राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश शिवकुमार शर्मा ने तुम्हें अपने खुले पत्र में कई सलाह दी हैं। ये सब तुम्हें माननी चाहिए यदि तुम भी उन अधिकांश आईएएस अधिकारियों में सम्मिलित होना चाहते हो जिनके कारण देश एवं उसके नागरिकों की दुर्गति हुई है। यदि नहीं, तो इस सेवा से बढ़कर संतोष प्राप्त करने का अवसर बहुत कम अन्य व्यवसायों में है। तुम्हें यह जानकर भी प्रसन्नता होगी कि कई 'मूर्ख' अधिकारी हैं जिन्होंने शर्मा की सलाह के अनुरूप कार्य नही किया। न तो उन्होंने कल्प वृक्षों की परिक्रमा की, न उन्होंने किसी पोस्टिंग को प्राइज या बर्फ वाली माना, न वे यसमैन बने, न वे परनिंदा या दुष्चर्चा की राजनीति का भाग बने, न उन्होंने अपनी रीढ़ की हड्डी को स्वयं से अलग किया, न उन्होंने बॉस को भगवान मानकर उसकी पूजा की, न उन्होंने कुटिलता को आत्मसात किया, न उन्होंने कभी शासन में बैठे लोगों में पूछ की परवाह की और न ही उन्होंने सूरजमुखी के फूल की तरह व्यवहार किया। संक्षेप में कहें तो यह कि उन्होंने पूर्व न्यायाधीश द्वारा गिनाई गई किसी भी सलाह को नहीं माना।

इसके बावजूद वे पूर्ण सत्यनिष्ठा, संवेदनशीलता एवं ईमानदारी से राष्ट्र तथा नागरिकों के हित में कार्य करते रहे। प्राइज और बर्फ वाली पोस्टिंग में कोई अंतर न मानते हुए प्रत्येक पद पर अपने कर्तव्य का निर्वहन करते रहे। ऐसे अधिकारियों को शासन की कृपा भले ही न मिली हो, उन्हें साधारण लोगों के दिलों में भरपूर स्थान मिला। शर्मा ने तो आईएएस अधिकारियों का ऐसा चित्रण किया है जैसे उनसे बड़े चाटुकार और रीढ़ विहीन अधिकारी देश में और कोई है ही नहीं। क्या न्यायिक सेवा में ऐसे अधिकारी नहीं हैं?

गौरव, शर्मा ने अंत में निर्णय तुम्हारी समझदारी पर छोड़ा है। मुझे तुम्हारी समझदारी पर शत प्रतिशत विश्वास है जिसके फलस्वरूप तुम उसी उत्साह, मानसिकता एवं उद्देश्य को बनाए रखते हुए सेवा में कार्य करोगे जिससे तुमने अच्छी नौकरी को ठोकर मारकर आईएएस में आने का निर्णय लिया था। तुम्हे दिग्भ्रमित करने के प्रयास भविष्य में भी समय-समय पर होते रहेंगे किन्तु तुम अपने चुने हुए मार्ग पर चलते रहोगे, ऐसा विश्वास देश को है।

देश को प्रगति पथ पर आगे बढ़ाने के संकल्प के पूरा होने हेतु मेरी शुभकामनाएं अन्य देशवासियों की तरह तुम्हारे साथ हैं।

- शुभेच्छु
राजेन्द्र भाणावत, पूर्व आईएएस